कर्बला का वाक़िआ क्यों ज़िन्दा है?

आयतुल्लाह सैय्यद मुजतबा हसन साहब कामुनपूरी

दुनिया में बड़े-बड़े वाक़िआत हुए। इन्क़ेलाब आए, लड़ाइयाँ हुईं, उनके चर्चे कुछ दिन रहे फिर ख़ामोशी छा गई। और उनके असरात ख़त्म हो गए। तारीख़ लिखने वालों ने तारीख़ के मक़बरों में इस तरह हिफ़ाज़त की जिस तरह "ममी" की हुई लाशें रखी जाती हैं। इसमें रंज के क़िस्से भी हैं और ख़ुशी के भी। किसी ज़माने में उनको दिलचस्पी से सुना और पढ़ा गया। फिर उनमें वह ताज़गी और दिलकशी न रही। लेकिन कर्बला का वाक़िआ तक़रीबन चौदह सौ साल में दिन रात दोहराया गया। इसके रंज व ग़म की याद यूँ मनाइ गयी जैसे आज का वाक़िआ है और इसकी बढ़ती हुई हरदिल अज़ीज़ी यह कहती है कि यह हमेशा ज़िन्दा रहेगा -

इन्सान को बेदार तो हो लेने दो
हर क़ौम पुकारेगी हमारे हैं हुसैन अ०

"जोश मलिहाबादी"

इस वाक़िए का अपनी तरफ़ खिंचाव और मक़बूलियत पूरी दुनिया जानती है, लेकिन इसकी कशिश का राज़ नफ़्सियात के पढ़ने और तारीख़ के पन्ने पलटने से खुलता है क्योंकि इस वाक़िए में ज़िन्दगी के संवारने के अमली तरीक़े मिलते हैं जिनकी ज़रूरत हमेशा महसूस हुई। ग़रज़ कि यह वाक़िआ लीडरों, अवाम, मुफ़क्किरीन, रिआया और हुकूमत के लिए हदें तय करता है। हर एक को उसका हक़ और फ़र्ज़ बताता है। सबको ज़िन्दगी के मैदान में जोश दिलाता है।

यह वाक़िआ रहबरों और मुस्लिहों का सरमाया है

आसमानी किताबों ने आम तौर से और क़ुर्आने करीम ने ख़ास कर इंसान की सलाह और तहज़ीब के लिए रहबरों और मुस्लिहों की जो रहनुमाई की है। कर्बला का वाक़िआ इसकी अमली तफ़्सीर है। अगर हम सरसरी तौर पर भी समझ लें कि क़ुर्आने मजीद ने रहबरों और मुस्लिहों की ताईद के लिए क्या-क्या एहतेमाम किया है। तो यह आसानी से समझ में आ सकता है कि कर्बला का वाक़िआ रहबरों और मुस्लिहों का ज़बरदस्त सरमाया है। इन्सान में मुख़्तलिफ़ ख़्वाहिशें हैं। इनके ग़लत इस्तेमाल से वह अपनी और दूसरों की ज़िन्दगी को नुक़सान पहुँचाता है। इसलिए ऐसे रहबर और मुस्लेह की ज़रूरत हमेशा महसूस हुआ की। जो अवाम के अख़लाक़ सुधारने के लिए फ़र्दे जमाअत को नेकी का पाबन्द बनाने के लिए बिरादरी, मसावात, हमदर्दी, ईसार, क़ुबानी और बलन्द नज़री का तसव्वुर पैदा करने के लिए, मज़लूम को ज़ालिम के पंजे से छुड़ाने के लिए और कमज़ोर को ताक़तवर बनाने के लिए ऐसे रौशन और अमली नमूने पेश करे। जिनसे सबकी हिदायत हो जाए और हर शख़्स अपनी-अपनी हद में ज़िन्दगी के कामों में लग जाए। रहबरी और इस्लाह का काम ख़तरों से भरा हुआ है। रास्ते में कांटे ही कांटे हैं। हर क़दम पर दहशत, ख़ौफ़ और हलाकत का सामना है इन सबके बावजूद रहबर और मुस्लेह ख़्वाहिश परस्ती की राहें बन्द करता है, वहमों और ख़ुराफ़ात की मुख़ालेफ़त करता है, पुरानी दीवारें गिराकर नई तामीर चाहता है। इसकी बातें अन्जानी होती हैं, इसका पैग़ाम तल्ख़ होता है, इसके मुख़ालिफ़ों की कसरत होती है इसको रास्ते से हटाने के लिए क़ुव्वत, मक्र, फ़रेब, लालच सब ही हथियार इस्तेमाल किये जाते हैं

अक़ाएद व ख़यालात मआशरत और अख़लाक़ की इस्लाह की मुहिम आसान काम नहीं। पुराने रस्म व रिवाज को मिटाना, पिछलों की अन्धी तक़लीद से रोकना, पड़ोसी क़ौमों की ग़लती की पैरवी से मना करना और बेअमली दूर करके ज़िन्दगी में हरकत पैदा करना बड़ी जफ़ाकशी, बर्दाश्त और क़ुर्बानी के बाद ही मुमकिन है। रहबर और मुस्लेह के सीने में भी धड़कता हुआ दिल गोश्त और ख़ून ही का लोथड़ा होता है। लेकिन उसे इतना ताक़तवर बना दिया जाए कि वह लोहे की तरह मज़बूत हो जाए और परेशानियों और रुकावटों का कोई असर न ले पूरी अख़लाक़ी ताक़त के बग़ैर मुमकिन नहीं।

इस तम्हीद के बाद अब हम यह बताने के क़ाबिल हुए कि कर्बला का वाक़िआ, दुनिया के सामने हर साल क्यों दोहराया जाता है। और दुनिया के दूसरे तारीख़ी वाक़िआत की तरह इसके ज़िक्र से तबीयत क्यों नहीं उकताती? दुनिया की तारीख़ सौ दो सौ बरस के बाद मुर्दा हो जाती है, मगर इसमें क्या राज़ है कि ये वाक़िआ असर के एतेबार से नूर का मीनार बना हुआ है? और इस की ज़िन्दगी पर कोई पुरानापन नहीं दिखाई देता। यह वाक़िआ न सिर्फ़ ख़ुद ज़िन्दा है बल्कि इस वाक़िए का सूर जिस मुर्दा क़ौम में फूका जाता है वह ज़िन्दा हो जाती है। इमाम हुसैन[अ०] की शख़सियत इन्सानी आज़ादी के सर का ताज है। आप आज़ादी की तहरीक के लिए बेनज़ीर मुसन्निफ़ थे, आपने ईसार व क़ुरबानी, शराफ़त, रवादारी, इस्तेक़लाल, सिबात, सरफ़रोशी, दिलेरी, बेजिगरी, तदबीर, जोश व ख़रोश, इख़्लास और बेग़रज़ी के सूरज को कमाल की बलन्दी पर पहुँचा दिया। कर्बला के वाक़िए से ज़्यादा नतीजाख़ेज़ इन्सान आफ़रीन, मुकम्मल व जामेअ् कोई दूसरा वाक़िआ दुनिया की तारीख़ को याद नहीं जिससे हर तब्क़े के इन्सान फ़ायदा उठाएं, जिसकी याद ग़ुलामी की ज़ंजीरें तोड़ दे, जिसका चर्चा कमज़ोर क़ौमों को आगे बढ़ा दे, जिसका ज़िक्र ज़ालिम को उसका अन्जाम बताकर, उसके हौसले पस्त कर दे। इस वाक़िए में ख़ुदा की मर्ज़ी का इतना ही लेहाज़ रखा गया। और अम्बिया[अ०] की सुन्नत की ऐसी ही पैरवी की गई और क़ुर्आन की हिदायत की इतनी पाबन्दी की गई कि इसकी मिसाल नहीं मिल सकती। नतीजा यह है कि क़ुर्आन की तालीम अमली तौर पर इमाम हुसैन[अ०] की शक्ल में सामने आई। ''हफ़ीज़'' होशियारपुरी ने इमाम हुसैन[अ०] की इस ख़ुसूसियत के ज़िक्र से अपनी नज़्म को दिलकश बनाया है –

क्या सुरख़ुरु हुआ है हुजूमे बला के बाद
हर अज़्म हेच है तेरे अज़्मे वफ़ा के बाद
इन्साँ को अपनी वुस्अते सब्रो रिज़ा की हद
मालूम हो गई तेरे सब्र व रिज़ा के बाद
वह ज़ेरे तेग़ सजदा वो ख़ूँ नाब से वुज़ू
बे रंग हर अदा है तेरी इस अदा के बाद

मुस्लेह का बड़ा कारनामा यह है कि वह हक़ की राह में पहाड़ की तरह जमा रहे। इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों के सिबात, पामर्दी और इस्तेक़लाल की मिसालें किस चीज़ से दी जाए? इमाम हुसैन[अ०] ने ऐसे धुन के पक्के बहत्तर इन्सान दुनिया के सामने पेश किये। जिन पर बातिल का कोई जादू कारगर न हो सका। न पानी की बन्दिश उनके अज़्म पर क़ाबू पा सकी, न मौत का यक़ीन उनके इरादों को बदल सका, न अमान की पेशकश, उनको रास्ते से हटा सकी, न लालच के ज़रिये से उन्हें मफ़्तूह किया जा सका। नई ज़िन्दगी ने उन्हें जब पुकारा तो उन्होंने हयात के पुराने पिंजरे को तोड़ डाला। न हेरास न ख़ौफ़, न दहशत, न सरासीमगी बल्कि मक़सद की सेहत का यक़ीन उसे हर इन्सान समझता है कि कर्बला का वाक़िआ ग़ुफ़्तार व रफ़्तार और क़ौल व फ़ेल का बेमिसाल संगम है। इमाम हुसैन[अ०] और उनके हमराहियों ने जो कहा वही किया। अमल की हद तक पहुँचते हुए अक़ीदे के पाँव अक्सर थक जाते हैं, उसूल पीछे रह जाते हैं। मसलेहत अन्देशी या जान व माल व आबरू का डर किसी दूसरी राह पर क़दम डाल देता है। लेकिन यह कर्बला की ख़ुसूसियत है कि किसी बच्चे, किसी जवान, किसी बूढ़े, किसी ग़ुलाम, किसी आक़ा, किसी मर्द, किसी औरत ने उसूल के दायरे से कोई क़दम बाहर नहीं रखा। अपने उसूल से हटने में ज़ाहिर बज़ाहिर दुश्मन से बच निकलने का इमकान नज़र आ रहा था,

लेकिन इमाम हुसैन[अ०] और उनकी जमाअत की राय में वह ज़िन्दगी मौत से बद्तर थी जो उसूल को तोड़ने से हासिल होती है। और वह जीत व ग़ल्बा हज़ार दर हज़ार हार से भी कम था जो बातिल से मदद लेकर हासिल होता। जंग की शुरुआत न करने का उसूल जिस शिद्दत से इमाम हुसैन[अ०] ने बरता, उसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं। और अगर कोई मिसाल तारीख़ को याद है तो वह हज़रत मुहम्मद[स०] के घराने से बाहर नहीं। इस उसूल में अमन का दाएमी पयाम छुपा हुआ है जो जंग को नामुमकिन बना देता है। जब हुर का प्यासा लश्कर इमाम हुसैन[अ०] से मिला तो ज़ुहैरे क़ैन[अ०] ने हज़रत से कहा कि यह क़ौम जो आज हमारे मुक़ाबले में है इससे लड़कर फ़ैसला कर लेना आने वाली फ़ौज की बनिस्बत आसान है मगर इमाम ने इस मस्लेहत अन्देशी को उसूल के मुक़ाबले में क़ुबूल न फ़रमाया। इस मौक़े पर हज़रत का जवाब ''मैं तो जंग की शुरुआत न करूँगा'' तारीख़ के लिए दाएमी फ़ख़्र का सरमाया बन गया है। और सिर्फ़ यही नहीं कि इमाम ने हुर की फ़ौज को इस हालत में पाते हुए कि वह मग़लूब हो सकती थी, फ़ना नहीं कर दिया बल्कि अपनी ज़रूरत का पानी पिलाकर, उन्हें दूसरी ज़िन्दगी अता की। अगर इमाम हुसैन[अ०] हुर की फ़ौज को इस हालत में पाते हुए कि वह मग़लूब हो सकती थी। फ़ना नहीं कर दिया। बल्कि अपनी ज़रूरत का पानी पिलाकर उन्हें दूसरी ज़िन्दगी अता की। अगर इमाम हुसैन[अ०] हुर की फ़ौज को तलवार के घाट उतार देते या पानी न देते और प्यास से मर जाने देते तो हालात की ज़ाहिरी सूरत में कुछ तबदीली ज़रूर पैदा हो जाती। लेकिन इमाम हुसैन[अ०] उसूल की ज़ंजीरों को तोड़कर कोई कामयाबी हासिल करना आर समझते थे।

इस मौक़े पर यह ध्यान दिलाना ज़रूरी है कि अगर तमाम दुनया इमाम हुसैन[अ०] के सिर्फ़ एक उसूल पर काम करने लगे तो जंग के पैदा करने वाली सियासत का मिज़ाज ही बदल जाए और ख़ौफ़ व हिरास के बादल बिल्कुल छंट जाएंगे और एक इन्सान की दूसरे इन्सान पर और एक क़ौम की दूसरी क़ौम पर मुहब्बत व उलफ़त पर नज़र पड़ने लगे।

आज दुनिया अख़्लाक़ी पस्ती और शामे हलाकत की तरफ़ दौड़ी जा रही है। ज़ाहिरी रहबरों में सदाक़त व इरादे की बड़ी कमी है। सच्चे रहबर मिलते नहीं हमें यक़ीन है कि इमाम हुसैन[अ०] ने जो तरीक़ा कूफ़ा व शाम के फ़ित्ना परदाज़ों और मुफ़सिदों के मुक़ाबले में इख़्तियार फ़रमाया था। वही तरीक़ा इस अहद के फ़ित्ना परदाज़ों और मुफ़्सिदों और ज़ुल्म व जौर और निफ़ाक़ के अलमबरदारों के साथ भी इख़्तियार किया जा सकता है।

कर्बला का मुताला जितना गहरा होता जाएगा मुस्लेहीन और रहबरों में मुक़ाबले की ताक़त उतनी ही बढ़ती जाएगी और वह अपनी बेबसी व बेतवानाई को अपनी कमज़ोरी न समझेंगे बल्कि ज़िन्दगी की आख़री सांस तक बातिल को मग़लूब करने की फ़िक्र में लगे रहेंगे। तफ़क्कुर व तदब्बुर के लिए यह वाक़िआत बहुत काफ़ी हैं। इमाम पर ज़ुल्म व ज़्यादती की धमकी के ख़ौफ़नाक हथियार आज़माए गए, क़त्ल की तजवीज़ें की गईं, जिलावतनी पर मजबूर किया गया। पानी बन्द किया गया, मुहासरे में ले लिया गया अज़ीज़ों, दोस्तों और भाई भतीजों के टुक्ड़े कर डाले गये अगर यह कहा जाए कि अगले ज़ालिम और बदकेश क़ौमों ने ज़ुल्म व सितम के जितने ढंग निकाले उन्हें इन्तिहाइ मुबालग़े के साथ हज़रत इमाम हुसैन[अ०] के मुक़ाबले में इस्तेमाल किया गया। और अगले रहबरों और मुस्लेहों ने दावत व नसीहत की जितनी राहें निकालीं। इमाम हुसैन[अ०] का हर क़दम उन पर एक तरक़्क़ी था, तो यह ऐन हक़ीक़त के मुताबिक़ है, अगर हमें नफ़्स की तरबियत ज़मीर की पाकीज़गी, मज़लूम की हमदर्दी, ज़ालिम से नफ़रत, हक़ की हिमायत, ख़ुदा की मुहब्बत, सब्र व इस्तेक़लाल, बहादरी व ग़ैरत के लिए कोई मिसाल सामने रखनी है। और किसी से सबक़ लेना है तो यह आरज़ू इमाम हुसैन[अ०] की पैरवी से पूरी हो सकती है। इमाम[अ०] के मिशन, इमाम[अ०] के तदब्बुर, इमाम[अ०] की आइडियालोजी ने अपना मक़ाम, वक़्त और जगह की सतह से ऊँचा बना लिया है। हज़रत के नक़्शे क़दम का निशान, हर ज़माने और हर जगह में हमेशा-हमेशा रहनुमाई करता रहेगा। और सब आपकी राह पर चल कर दूसरों के लिए मिसाल बन सकेंगे। ■■■